एड्स के ख़तरों से घिरी औरत

आभा

एक नई बीमारी, एक नई चर्चा। एड्स का नाम तो बहुत सुन रहे हैं पर उसका हम औरतों पर क्या असर पड़ता है ये जानकारी बहुत अधूरी है। और जो है वह भी नैतिक मूल्यों और पितृसत्तात्मक नज़रिए में क़ैद है, चूंकि एड्स का सवाल सीधा सैक्स व्यवहार से जुड़ा है। इसलिए औरतों के संदर्भ में इसे वेश्याओं से जोड़ा जा रहा है। आम लोगों के मानस में औरतों और ख़ासतौर पर वेश्याओं को इसे फैलाने के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जा रहा है।

सवाल यह है कि सच में यह बीमारी फैलती कैसे है। औरतों पर इसका क्या ख़ास असर पड़ता है तथा इसे फैलने से रोकने के लिए—किनकिन लोगों को किस तरह की ज़िम्मेदारी लेनी होगी।

दरअसल एड्स की शुरूआत होती है शरीर में एच.आई.वी. वायरस (विषाणु) के प्रवेश करने से। यह स्थिति एच.आई.बी. पौजिटिव कहलाती है। यह वायरस कई सालों तक शरीर में चुपचाप छिपा रह कर कभी भी एड्स के रूप में प्रकट हो सकता है। यह वायरस खून, वीर्य, योनि प्रवाह, माहवारी का खून और स्तन के दूध के ज़रिए एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैल सकता है। जो व्यक्ति एच.आई.वी. विषाणु युक्त है। उसका खून या वीर्य यदि औरत के रक्त प्रवाह से मिल जाए तो वह इस रोग से ग्रस्त हो सकती है। मतलब यह कि ये विषाणु असुरक्षित सैक्स, दूषित खून व सुई से फैल सकता है।

औरतों के लिए ज्यादा ख़तरा खड़ा करने वाले तरीके हैं:

- योनि या गुदा के रास्ते बगैर निरोध के संभोग
- माहवारी के दौरान बगैर निरोध के संभोग
- कटे या जख्मी हाथ को योनि में डालना।
- दूषित सुई का अपने शरीर पर इस्तेमाल
- शरीर में दूषित खून चढ़ाना

औरतों पर एड्स के असर को जानने के लिए पहले औरत के स्वास्थ्य का दर्जा, परिवार और समाज में उसकी अनेक भूमिकाएं, उसके अपने शरीर और जीवन पर नियंत्रण की कमी, उसके लिए सबसे कम साधनों की तजबीज आदि को समझना जरूरी है, क्योंकि एड्स के संदर्भ में ये सभी चीजें औरतों को खास तरीके से प्रभावित करती हैं। ये पितृसत्तात्मक नज़रिया उसके खतरों को कई गुणा बढ़ा देता है। औरत चाहे पत्नी हो या वेश्या, चाहे वह स्वास्थ्य कार्यकर्ता हो या बच्चे जनने वाली मां, एकल औरत हो या एक मर्द की दो पत्नियों में से एक, सबको एड्स का खतरा है। औरत तब तक एड्स के खतरों से घिरी रहेगी जब तक शारीरिक संबंधों

के बारे में सारे निर्णय उसके हाथ में नहीं है और जब तक उसका साथी उसके निर्णयों की उपेक्षा करता है।

एड्स से बचाव के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है 'सुरक्षित सैक्स', परंतु ज्यादातर औरतों के लिए सैक्स एक जबरदस्ती, शादी के बाहर दूसरे मर्दों की ज़बरदस्ती। औरत के लिए 'हां' और 'ना' कहना दोनों ही ख़तरे से ख़ाली नहीं है। पत्नी के नाते वह असुरक्षित सैक्स से ना करती है तो हिंसा का भय और वेश्या के नाते इन्कार का मतलब है भूखे मरने का डर।

निरोध का इस्तेमाल सिर्फ मर्द ही कर सकता है चाहे, वह पत्नी के साथ सोए या किसी और औरत के साथ। इसलिए हर रिश्ते में सुरक्षित सैक्स अपनाने की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी मर्द की ही बनती है।

मर्द-औरत के सभी रिश्तों में 'पावर' मर्द के हाथ में है। जब तक औरत मज़बूत और ताक़तवर नहीं होती तब तक वह तरह-तरह के खतरों से घिरी रहेगी। औरत बच्चा नहीं चाहती फिर भी मर्द निरोध का इस्तेमाल नहीं करता तो औरत के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए वह सुरक्षित सैक्स अपनाएगा यह मानना मुश्किल लगता है, परन्तु आज पुरुष की भलाई भी इसी में है कि वह हर जगह, हर शारीरिक संबंध में निरोध का इस्तेमाल करे और अपनी ख़ास ज़िम्मेदारी को समझे।

एड्स फैलने का दूसरा कारण है दूषित खून। जचकी और सामान्य रूप से गिरे हुए स्वास्थ्य के कारण औरतें खून लेने के लिए ज्यादा मजबूर होती हैं। दूषित खून और दूषित सुई के ज़रिए औरतों के लिए एड्स का ख़तरा बहुत अधिक है। स्वास्थ्य व्यवस्था को औरत के स्वास्थ्य के प्रति सजग और संवेदनशील बनाना चाहिए। उसकी जिम्मेदारियों ओर परेशानियों को ध्यान में रखकर ख़ास साधनों को मुहैया कराना बहुत जरूरी है। □

उसने चाहा एक सहभोगी
कुछ गलत नहीं था,
उसने कहा 'निरोध'...।
वह चौंका
नखरा किया
गुस्सा किया...
उसे सुख नहीं मिलता।
वह देता रहा
प्यार का वास्ता।
उसे दुख न हो, इसलिए
वह चुप रही
होने दिया-सब
और...
उसे एड्स हो गया।

(एक विज्ञापन से अनूदित)